(ख) मुख्यतः ईस्टर्न कोलफील्ड्स लि०, भारत कोकिंग कोल लि० और सिंगरेनी कोलियरीज कंपनी लि० से श्रम क्षमता के उपयोग की सूचना मिली है। ई० को० लि० और भा० को० को० लि० में गिरावट का मुख्य कारण बहुत सी कम क्षमता वाली भूमिगत खानों का होना है, जहां उत्पादन में वृद्धि नहीं होती है। उत्पादकता में सुधार लाए जाने के विचार से इन खानों का पुनर्गठन किया जा रहा है। सि० को० कं० लि० में क्षमता उपयोग में कमी होने का मुख्य कारण कोयला क्षेत्रों के आसपास और अन्दर कानून और व्यवस्था की चल रही परिस्थिति के कारण कार्य का ठप्प होना और हड़तालों का होना है। इस मामले की आंध्र प्रदेश सरकार के साथ नियमित रूप में कार्यवाही की जा रही है।

देश के उत्तरी क्षेत्र को कोयले की अपर्याप्त आपूर्ति

3843. **श्री रणजीत सिंह :**
डा० जिनेन्द्र कुमार जैन :

क्या **कोयला** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान 12 मार्च, 1992 के "दि फाइनेन्सियल एक्सप्रेस" में "नार्दन रोजन हिट बाई इनएडिकवेट कोल, आयरन सप्लाई" शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित समाचार की ओर दिलाया गया है ;

(ख) यदि हां, तो क्या यह सच है कि उत्तरी भारत में स्थित उद्योगों को पर्याप्त मात्रा में कोयले की आपूर्ति नहीं की जा रही थी जिसके कारण औद्योगिक उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना है ;

(ग) यदि हां, तो क्या भविष्य में कोयले की पर्याप्त सप्लाई को सुनिश्चित करने के लिए सरकार कोई उपयुक्त कदम उठाने का विचार रखती है ; और

(घ) यदि हां, तो उनका ब्यौरा क्या है ?

कोयला मंत्रालय में उप-मंत्री (श्री एस० बी० नवलेगौड़ा : (क) जी, हां।

(ख) से (घ) अनंतिम उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार कोल इंडिया लि० तथा सिंगरेनी कोलियरीज कंपनी लि० में अप्रैल से जनवरी, 1992 की अवधि के दौरान गैर-महत्वपूर्ण क्षेत्र के उपभोक्ताओं को 51.84 मि० टन कोयला प्रेषित किया गया जबकि इसकी तुलना में पिछले वर्ष 45.72 मि० टन कोयले का प्रेषण किया गया था। किंतु औद्योगिक उपभोक्ताओं की, जिसमें उत्तर क्षेत्र के कुछ उपभोक्ता भी शामिल हैं, महत्वपूर्ण क्षेत्र के उपभोक्ताओं को, मुख्यतः विद्युत उपयोगिताओं को रेल अथवा सड़क द्वारा कोयले के संचालन में प्राथमिकता दिए जाने के कारण कोयले की कम आपूर्ति का सामना करना पड़ा। कोयला कंपनियों को, सभी उपभोक्ताओं की कोयले की आपूर्ति में वृद्धि किए जाने के निर्देश दिए गए हैं और जहां तक गैर-महत्वपूर्ण क्षेत्र के उपभोक्ताओं का संबंध है, कोयला कंपनियों को यह निर्देश दिए गए हैं कि वे सड़क अथवा रेल द्वारा उन्हें संयोजित कोयले की मात्रा में से न्यूनतम 50% मात्रा की आपूर्ति करें।

एस० ई० सी० एल० द्वारा कोयले के उत्पादन तथा वितरण के लक्ष्य

3844. **श्री रणजीत सिंह :**
डा० जिनेन्द्र कुमार जैन :

क्या **कोयला** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) वर्ष 1991-92 में साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के कितने एकक कोयला उत्पादन में लगे थे तथा क्या इन एककों के लिए कोयला उत्पादन तथा वितरण के भी कोई लक्ष्य निर्धारित किए गए थे ;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है ;

(ग) क्या निर्धारित लक्ष्यों के निश्चित समय के भीतर प्राप्त कर लिए जाने की संभावना है ; और

(घ) यदि नहीं, तो उसके क्या कारण हैं तथा इन एककों द्वारा वर्ष के दौरान कितना उत्पादन और वितरण किए जाने की संभावना है ?

कोयला मंत्रालय में उप-मंत्री (श्री एस० बी० नयमेगौड़ा) : (क) और (ख) साउथ ईस्टर्न कोल फील्ड लि० की कोयला उत्पादन करने वाली खानों के नाम के साथ वर्ष 1991-92 के लिए उक्त खानों में निर्धारित उत्पादन लक्ष्य संलग्न विवरण में दिया गया है । खानवार कोयला का प्रेषण किए जाने संबंधी लक्ष्य निर्धारित नहीं किए जाते हैं। वर्ष 1991-92 के लिए साउथ ईस्टर्न कोल फिल्ड लि० के संबंध में निर्धारित प्रेषण लक्ष्य 59.298 मिलियन टन रखा गया है ।

(ग) और (घ) वर्ष 1991-92 के लिए साउथ ईस्टर्न कोल फिल्ड लि० के संबंध में 62.6 मिलियन टन के उत्पादन लक्ष्य और 59.298 मिलियन टन के निर्धारित प्रेषण लक्ष्य को प्राप्त कर लिए जाने की संभावना है ।

विवरण

वर्ष 1991-92 में कोयले के उत्पादन में कार्यरत साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लि० की खानों के लिए निर्धारित उत्पादन लक्ष्य

खान का नाम	मिलियन टन में कोयला उत्पादन लक्ष्य
बुरहार नं. 1	0.180
झानपुरी भूमिगत	0.200
सुभाष ईंक्लाइन	0.120
बुरहार नं. 3	0.160
अमलाई	0.180
चाचाई	0.300
विवेक नगर इन.	0.100
रूंगठा	0.150
बंगवार	0.130
राजेन्द्र	0.005
नवगांव	0.020
धानपुरी ओ.सी.	1.200
शारदा ओ.सी.	0.500
अमलाई ओ.सी.	0.300
नौरोजाबाद (ई)	0.150
नौरोजाबाद (वे)	0.310
बीरसिंहपुर	0.200
पाली	0.360
उमरिया	0.150
पिनौरा	0.150
जमुना 1,2,11,12	0.200
जमुना 9 और 10	0.060
कोटमा पश्चिम	0.300
कोटमा	0.140
गोविन्दा	0.570
मीरा	0.110
भद्रा	0.170
जमुना ओ.सी.	0.755
नाथ झागरा खंड	0.030
साउथ झागरखंड (पुराना)	—
साउथ झागरखंड (नया)	0.130
वेस्ट झागरखंड	0.280
बी.सीम और पालकीमोरा	0.350
राजानगर	0.125
राजानगर आर.ओ. (नया राज तथा राज 7 व 8)	0.615
झिमर	0.190

खान का नाम	मिलियन टन में कोयला उत्पादन लक्ष्य
साउथ झिमर . .	0.180
मलगा . .	0.265
बिजुरी . .	0.400
बेहराबांध . .	0.220
सोमना इंक्लाइन . .	0.030
कुरजा . .	0.050
डोला ओ.सी. .	1.000
राजनगर ओ.सी. .	0.300
कुरसिया (भू. व ओ.सी.)	0.940
सोनावानी . .	0.120
चिरीमीरी भू. . .	0.460
एन.सी.पी.एच. .	0.510
नाथ चिरीमीरी . .	0.360
डुमन हिल . .	0.570
कोरिया (भू. व ओ.सी.)	0.245
वेस्ट चिर. (भू. व ओ.सी.)	0.400
चिरीमीरी ओ.सी. .	0.400
चुरचा विस्तार . .	0.720
चुरचा वेस्ट . .	0.300
कटकोना . .	0.240
पंडवपारा . .	0.040
जयनगर (पुराना)	0.350
जयनगर (नया) .	0.180
कुमदा (पुराना) .	0.210
कुमदा (नया व बलरामपुर)	0.410
भटगांव . .	0.550
बिसरामपुर ओ.सी.	1.050
दुग्गा ओ.सी. . .	0.200
राजगमार 4 व 5 .	0.320
राजगमार 6 व 7 .	—
बालगी . .	0.420
बंकी . . .	0.400
सुरकाचार (मेन) .	0.430

कोयले के मूल्यों में आवधिक वृद्धि

3845. **श्री रणजीत सिंह :**
सरदार अगजीत सिंह अरोड़ा :

क्या **कोयला** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) कोयले का राष्ट्रीयकरण होने से लेकर जनवरी, 1992 तक उसके मूल्य में कितनी बार वृद्धि हुई तथा उसके राष्ट्रीयकरण होने के समय के मूल्य की तुलना में वर्ष 1992 में कितने प्रतिशत की वृद्धि हुई;

(ख) क्या यह भी सच है कि राष्ट्रीयकरण के बाद को उसकी उत्पादन लागत में भारी वृद्धि हुई है ; और

(ग) यदि हां, तो वर्ष 1991–92 में प्रति टन अनुमानित उत्पादन लागत कितनी है तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उसकी लागत की तुलना में यह कितनी है ?

कोयला मंत्रालय में उप-मंत्री (श्री एस0 बी0 नवलेगीड़ा :(क) वर्ष 1973 के बाद से कोयले के मूल्यों में 10 बार संशोधन किया गया है। कोल इंडिया लि0 द्वारा उत्पादित कोयले के मामले में, राष्ट्रीयकरण के समय औसत मूल्य की तुलना में वर्ष 1992 में कोयले के औसत मूल्य में लगभग 758% की वृद्धि हुई है।

(ख) यह सच है कि कोयले के उत्पादन की लागत में वृद्धि हुई है। किन्तु कोयला कम्पनियां ऐसी वृद्धि को रोकने के प्रयास कर रही हैं।

(ग) बजट अनुमानों के अनुसार वर्ष 1991–92 के दौरान कोल इंडिया लि० द्वारा उत्पादित कोयले के उत्पादन की औसत लागत 294.17 रु0 प्रति टन होने का अनुमान है।